6

कलानन्द भट्ट

# कान्ह पर लहास हमर

## ( मैथिली गजल संग्रह )

कलानन्द भट्ट

प्रकाशन
**किसुन संकल्प लोक**
सुपौल

प्रकाशक :
किसुन संकल्प लोक
सुपौल



पहिल खेप : हजार प्रति
सितम्बर, १९८३ ई०

दाम : चारि टाका

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस
पटना-६

# गजलक मादे

आधातित होइतो गजल आइ प्रत्येक भाषाक काव्यमय अभिव्यक्ति भऽ गेल अछि। मैथिलीमे पूर्वक अपेक्षा आइ गजलक आवश्यकताकेँ अधिक तीव्रतासँ अनुभव कयल जा रहल अछि। एहि दशकमे आबिकऽ आने भाषा जकाँ मैथिलियोमे गजलक क्षेत्र व्यापक आ सघन भेल अछि। समसँ सुखद छैक जे गजल अपन शाब्दिक अर्थक परिधिकेँ क्रूरताक संगे तोड़ि देलक अछि। अपन पुरान आ मूल्यहीन केँचुआकेँ उतारि फेकलक अछि आ जन-सामान्यक प्रत्येक संघर्षमे, ओकर श्वासक आरोह-अवरोहमे, ओकर दुख-दैन्य-पीड़ामे, ओकर सुख-उल्लासमे अपन मूल्यवान साझेदारी स्थापित कयलक अछि। आजुक गजलकेँ सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक अवस्थासँ बेस गहींर सम्बन्ध छैक तेँ एहि तीनू अवस्थामे पसरल कुव्यवस्था, असमानता, अन्याय, भ्रष्टाचार आ जमौड़ाकेँ गजलक प्रत्येक शब्द अपन तीक्ष्णतासँ, अपन धार सँ आ अपन वेगसँ ध्वस्त करबाक उपक्रम करैत अछि।

आजुक मानवीय जीवन बड़ दुखद स्थितिसँ गुजरि रहल अछि। पूँजीवादी आ सामन्ती व्यवस्थाक मुट्ठी भरि लोक सामान्य जन-जीवनकेँ बड्ड निरीह आ पंगु बुझैत अछि। ओकर कोनो तरहक गतिविधिकेँ ई मुट्ठी भरि लोक अपन एक इशारापर नष्ट कऽ दैत अछि अथवा असामाजिक तत्व कहि अथवा देशद्रोही कहि ओकरा सभ तरहेँ निराश आ हताश करबाक प्रयत्न करैत अछि। हमर सभक रचनात्मक गतिविधि ओकर सभक एहि तमाम प्रयासकेँ ध्वस्त करबाक वेगवान साधन बनय, से कामना करैत छी।

हम अपन गजलक माध्यमसँ ओहि हताश आ निराश जन-जीवनमे नव प्राण फुंकबाक प्रयास करैत छी। जँ शब्द सँ ओ महत्वपूर्ण आ अवश्यम्भावी क्रांति भऽ सकैत अछि तँ हम गजलक माध्यमसँ ओहि क्रांतिक आह्वान करबाक प्रयास करैत छी। अपन निरन्तरतामे ई सहस्त्रो मनुक्ख कहियो पराजित नहि भेल, हमरोलोकनि कहियो पराजित आ हताश नहि होयब। गजल निश्चित रूपसँ हमरा सभक क्रांतिक संवाहिकाक रूपमे काज करत।

गजल हमरा अभिव्यक्तिक सभसँ सहज-सुलभ माध्यम बुझाइत अछि, तेँ अपन हृदयक सम्पूर्ण भावराशिकेँ हम गजलक माध्यमे व्यक्त करबाक चेष्टा करैत छी।

एहि संग्रहक प्रकाशन हमरासँ कहिनहु संभव नहि छल जँ श्री दीपक कुमार बनर्जी, श्री डी० पी० सिंह, श्री सुरेन्द्र गरांइ, श्री रामनाथ सिंह, श्री विश्वनाथ मिश्र आ श्री बाणा प्रसाद सिंह सहयोग नहि करितथि।

छोट भाइ सन सिनेही केदार काननक सहयोग अद्वितीय अछि। ओ पटनासँ सदिखन प्रेरित करैत रहलाह आ हम गजल लिखैत रहलहुँ, मिथिला मिहिरक लेल पठबैत रहलहुँ। हिनका विषयमे अधिक कहब व्यर्थ।

एहने किछु व्यक्ति जेना सर्वश्री रामानुग्रह झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रो० धीरेन्द्र 'धीर', महाप्रकाश, डा० महेन्द्र, तारानन्द वियोगी, एम० एम० उरा तथा आकाशवाणी दरभंगाक चन्द्रकांत झाजीक प्रति अपन आभार व्यक्त करैत छी, जे समय-समय पर अपन स्नेह-सुधासँ हमरा सिक्त करैत रहलाह अछि।

भाइ उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ विभूति आनन्द धन्यवादक पात्र छथि जे प्रेसक ओसरी सँ मुक्ति दिऔलनि।

एहि संग्रहक अधिकांश गजल मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

मुरलीधर प्रेस, पटनाक व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र झाजी धन्यवादक पात्र छथि जे एतेक शीघ्र एकर प्रकाशन संभव भेल।

—कलानन्द भट्ट

सितम्बर, १९८३।

घर घरेक आगि सँ अछि जरल जा रहल
भाइ सँ भाइ द्वेषे भरल जा रहल।

कौन आयल जमाना जुआरी एतय
भावना अविवेकी बनल जा रहल।

क्षुब्ध धरती गगन नयन मूनल अपन
अछि बसातो बलाती बनल जा रहल।

फूल-कांट मे अन्तर कयनिहार जे
ओ चमन छोड़ि क' अछि चलल जा रहल।

के कहत चोर कें चोर सभ चोर अछि
आइ रामो सँ चोरी कयल जा रहल।

□

मुँह देखि-देखि मुङबा बँटै छी अहाँ
लाभ जकरे सँ पात भरै छी अहाँ।

चान दुतियाक क्रमसँ अघर पर बढ़य
रंग गिरगिट जकाँ बदलै छी अहाँ।

छी महामान्य विष-मधु भरल घैल सन
व्यूह रचिक' सहायक बनै छी अहाँ।

डेग नापल उठय ने हुसल आइ तक
धरा-अम्बर कें मुठिये रखै छी अहाँ।

सभ जानय मुदा क्यो न बाजैत अछि
जे बाजय करेजे कटै छी अहाँ।

□

कहू की कथा कहुना जीबि रहल छी
फाटल गुदरी अपन हम सीबि रहल छी।

दाम श्रम केर संचित भजा हाट पर
बोझ महगी बनल हम लीबि रहल छी।

भार परिवार जिनगी बनल ठूँठ सन
आब सूदिक जहर हम पीबि रहल छी।

कोना बांचत प्रतिष्ठा विवशता भरल
धसल टांग दलदलमे खीचि रहल छी।

पौरुष गमा हम नैं बैसी, अछि चिन्ता
चिन्ताकुल माथ अपन पीटि रहल छी।

□

सामान्य मनुष्यक अभिव्यक्ति
विवशता | जकर दुःख-दर्द
क भुक्तभोगी पीडक
आकांक्षा ~ प्रेरणादायक |

सभ लूटं छै लूटू ने लूट मचल छ
सक जकरा ने वैह इमनदार बनला छै।

कागत पर देखू जं देखक हा योजना
धरती पर सूखल श्रामील बनल छै।

मारू विवेक चलू पेटो ने भरैछ
नीति कानय कुतीतिक श्रवार चलल छै।

जं चूकब तं चूकब मुँह चकरी होयत
के कहत ऊंट कोन गरे बैसि रहल छै।

बात रखबारक तं कात करू काका
श्रौ खोपड़िये खेत उजाड़ि रहल छै।

☐

ने रहल घूस, घूस व्यवहार बनल छै
युग आयल एहन की सदाचार बनल छै।

ऊपर सं नीचामे नीचा सँ ऊपर धरि
रेलक डिब्बा सन जोड़क जोगाड़ बनल छै।

नेताकें पार्टी चलयबाक नाम पर
औ हाकिम लेल घरनीक हार बनल छै।

ससरत ने काज कोनो आगां बिनु घूसक
आइ घूसेक सभठाम बाजार गरम छै।

कण-कणमे व्याप्त भेल जन-जनमे पसरल
हनुमाने सन शक्तिक भंडार बनल छै।

वैध ने करैछ सरकार किए एखन धरि
जखन कोमलतम नाम 'उपहार' बनल छै।

घूसक ने स्रोत कोनो जिनका छथि निन्दक
आइ हुनके टा लेल कदाचार बनल छै।

□

बाट बाधित पहाड़े छै पाटल जखन
सीयत दरजी के आकासे फाटल जखन।

आइ अंगा फकीरक घरा अछि बनल
सौंसे चेफड़ी समस्येक साटल जखन।

द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, डर, तनावक लहरि
एक दोसर सँ दूध जकाँ फाटल जखन।

गर्म मौसम बनल लपलपावैछ जीह
प्यास छै शोनिते केर जागल जखन।

लीख पर ने अपन वियतनामे रहल
देश हमरो वैह लीख लागल जखन।

□

मरि-मरिक' जे जीबय से आदमी चाही
राखय बिहाड़ि हाथमे से आदमी चाही ।

अधिकार लेल निकलय बनिक' प्रचंड जे
लह्-लह् करैत सांप सन से आदमी चाही ।

ढाहय जे भीत शोषणक गर्जन करैत घोर
बनिक' कराल काल सन से आदमी चाही ।

लाबय जे लादि पीठ पर समताक चान के
नभसँ प्रबल राकेट सन से आदमी चाही ।

हर्षक सुगंधि बांटय घर-घरमे जे अनूप
अनूपम बसन्त ऋतुसन से आदमी चाही ।

▣

आइ बगुली सं टाका उड़ै छै बजार मे
औ बिन पाँखि बगड़ा बनै छै बजार मे।

टकही दू टकही केर गनती नै कोनो
नोर नमरीक नयन सँ खसै छै बजार मे।

ओ हँसिक' चलैछ पाइ कारी छै जकरा
पाइ कारी ने जकरा झखै छै बजार मे।

खेपत ई जीवन गरीब मजदूर कोना
समय दिन-दिन सामंती बनै छै बजार मे।

हम फानी मे व्याधाक वाझल हरिण जकाँ
पनरहियो ने महिना चलै छै बजार मे।





पेट के पीठ बनाबो कोना हम कहियौ
राति कें दिनमे सजाबी कोना हम कहियौ।

छै ने वस्त्र डाँड़मे कप्पो लपेटि रहि लेबै
बिना अन्न भूख बुझाबी कोना हम कहियौ।

पात कोबियोक आब हाटमे बिकय लागल
सेहन्ता दालिक मेटाबी कोना हम कहियौ।

हृदय मानल जे गरीबक अछि सूखल लकड़ी
लगाक' आगि जराबी कोना हम कहियौ।

सपना जे रहय भेलै बालुक गरम धरती
फूल आसाक उगाबी कोना हम कहियौ।

□

युग बदलल जमाना बदलि गेल छै
विकृतिक रंग मुँह पर ले भरि गेल छै।

रहल आकाश ओ ने रहय जे तखन
पशुओ देखि वोनमे भरमि गेल छै।

जप्त गांडीव पांडव जहलमे पड़ल
कृष्ण-शकुनीमे जूआ पसरि गेल छै।

द्रौपदीक हाल पर ने कननिहार क्यो
मुखिया लग गहूम लेल तरसि गेल छै।

दया करुणा बनल रक्त लोभी चिता
बुद्धदेवो पर हिंसा नमरि गेल छै।

□

पियासे ब्रेकल हरिणा आइ बैशाखी रौदमे
गदहा पर चढ़लै अनंग आइ बैशाखी रौदमे ।

उड़ल परबा जे घुटकै छल नचैत चोबटिया पर
सोहरैत देखि भुजंग आइ बैशाखी रौद मे ।

देल आदेश सूली केर गिरगिट सन न्यायमूर्त्ति
खढ़िया केँ भेटलै सजाय आइ बैशाखी रौद मे ।

ठकिक' मृगराज केँ ओ कयलक बन्न पिंजड़ा मे
हाथी पर उलुआ सवार आइ बैशाखी रौद मे ।

लेल सचिवक पद गिद्ध मुकुट नढ़ियाक माथ पड़ल
अछि आतंकित वन-प्रदेश आइ बैशाखी रौद मे

□

अहाँ जोबिते मनुक्ख केँ जरा रहल छी
घेरि गामे केँ स्वाहा करा रहल छी।

हाय पीड़ाक धनगर विकट शोर मे
दानवी-वृत्तिकेँ दनदना रहल छी।

ने बूझल बृढ़, नेना, ने मौगी, मरद
भागय जे बन्नूक सँ उड़ा रहल छी।

मनुष्यता भागल क्रूरता सँ अहाँक
सामंती-प्रथा पुनि चला रहल छी।

कने सोचू कोना खींचि नूआ अहाँ
पांचाली केँ नङटे बना रहल छी।

कोरवी तत्व ल' अहाँ शकुनि बनल
नरमेघक ई पासा रचा रहल छी।

□

साम्यवादी

प्रीत कोमल हमर अछि सोहारो बनल
भोर भागल छै साँझ शिकारी बनल।

हम झरल पात गाछक सदृश ठाढ़ छी
अछि समस्या अगारी पछारी बनल।

धरती फाटल गगन माथपर अछि चढ़ल
ने सहारा कोनो बोझ भारी बनल।

छल जकर आस अछि ओ टुटल खाट सन
सुखा क' ओकर रूप कारी बनल।

□

भेल ई की, कहाँ सँ लहरि गेल अछि
प्रश्नवाचक धरा पर पसरि गेल अछि।

आदमो आदमी केर बैरी बनल
कोन नभसँ घृणा ई उतरि गेल अछि।

अछि बटोही सशंकित बनल बाट पर
दिन मे आभास रातुक अभरि गेल अछि।

गंध टटका पवनमे भरल शोणितक
प्रीत पाहुन बनल आ स सरि गेल अछि।

उर काँपैछ धरतीक भालरि जकाँ
युग आदम कोना फेर पलटि गेल अछि।

□

कोन काजक ई काया उपकारी ने भेल
जिनगी जोले सँ की जँ इमनदारी ने भेल।

मनुख आ मनुखमे ने छै कोनो अन्तर
अन्तर धर्मक कोनो बात भारी ने भेल।

फूल उपवनमे फुलय वा बालूक ठूह पर
फूल फूले रहत ओ कंटकारी ने भेल।

नयन फोलू भगाउ साम्प्रदायिक लहरि
लाल सभक शोणित ककरो कारी ने भेल।

घरमे फूटक क्रिया गर्म सीमांत अछि
भावना संकुचित विषमय कारी ने भेल।

मंत्र मधुमय कहाँ ओ विश्व-बन्धुत्व केर
कोन उतरल ई युग दुराचारी ने भेल।

बाट बाधा सँ प्रगतिक अछि भरल जा रहल
दौड़मे डेग ठमकत गति पछारी ने भेल।

—

मानवीय भावना भाव
मे आवश्यक।

बाट छैवा कि नहि हम हेरा गेल छी
सभठाम पसरल समस्या घेरा गेल छी।

अकबका गेल छी बुद्धि निष्क्रिय बनल
शिथिल जिनगी जेना हम सेरा गेल छी।

पयर परिवार जाँतक सदृश्य अछि बन्हल
कोल्हुमे हम अभावक पेरा गेल छी।

महगी-शोषण चढ़ल अछि दुहू कान्ह पर
भूख दौड़ल अबै-ए डेरा गेल छी।

होयत परिणाम की सभमे विस्मय भरल
हम तीनोमे सरिपहुँ चेहा गेल छी।

नाम ल' क' जकर घाट पार करै छी
नाह ओकरे मुदा मझधार धरै छी।

के बुझै अछि गरीबक व्यथा केर कथा
मूर किछुओ नें, सूदिये पहाड़ करै छी।

कौर छिनबामे मुँहक ने संकोच अछि
उठा आगाँ सँ सूखल पथार चलै छी।

हम मरी ने जीबो जान हुँकरैत अछि
अहाँ स्वारथमे डूबल शिकार करै छी।

अपार माया थिकहुँ कालनेमि अहाँ
विष खोआक' मधुर उपचार करै छी।

□

गंभीर भेल, मोन सिहकल बसात कोन
उतरल अछि अम्बर सँ नहुँए परात कोन।

छल जे इजोत केर आइ हमर आश गेल
कयलक अभिलाष पर, घाते पर घात कोन।

आनब हम चान तोड़ि कहने छल धरती पर
छीनैछ ओ बोल आब ई भेलै बात कोन।

देखल ने देह-दशा दर्दो थिक वस्तु कोनो
बुझल ने गाम, नगर, डगर, कुश-काँट कोन।

मुरझायल प्राण हमर प्रीतक परिणाम ई
बिसरि गेल सत्तामे बाट आ कुबाट कोन।



ई जिनगी ने जिनगी जहर भेल छै
आइ सभठाम धरा पर कहर भेल छै।

शांति सूतल सिनेहक कतहु कोरमे
क्रांति उन्मादिनी विष लहर भेल छै।

भेल सीमांत केर रंग भटरंग सन
भोरमे भावना दूपहर भेल छै।

आदमी आदमी सं घृणामे डुबल
कोन खूनी युगक ई पहर भेल छै।

नून सँ खून सस्ता बनल जा रहल
द्वेष केर बाट सभ अग्रसर भेल छै।

□

चूलहा मेरायल आ जाँता उदास छै
कानैछ मुनमा ने अन्न केर आस छै।

दूध लछमिनिया केर छातीक सुखायल
बाड़ीमे सागो ने आब अधिक रास छै।

भेटल ने पैंच कतहु घुमि अयलहुँ भरि गाम
छल जे थारी, लोटा बनियाँक पास छै।

चिन्ता सँ आकुल मोन भूखक बिहाड़ि उठल
सातम ई साँझ हाय ! उष्ण भेल साँस छै।

राकसक टीक जकाँ नमरल बेकारी
ओ नारा 'गरीबी हटाओ'क फाँस छै।

□

बेकारी। महागाई - [illegible]

हम छोड़ब नै ढाहब अहाँ केर भीत
छी बनल भीत शोषण अहाँ केर रीत ।
कालनेमिक कलासँ बनल छी अहाँ
दी जलमे जहर अछि अहाँ केर रीत ।
दाम श्रम केर सभटा झपटि लैत छी
घाव पर नून सन अछि अहाँ केर प्रीत ।
हम मली हाथ, सोना मलै छी अहाँ
भूख कानय हमर, घर अहाँ केर गीत ।
ठाढ़ जिनगी मरने केर डगर पर एतय
निडर उर, ने कनियो अहाँ केर भीत ।
करब निर्माण समताक जग जाहिमे
हम ने हारब, होयत ने अहाँ केर जीत ।

बिना नूआक नेना हमर काँपि रहल छै
फाटल कप्पा सँ तन कोहुना झाँपि रहल छै।

वस्त्र कोटामे आएल गरीबेक लेल
धनिके रजाइक लेल नापि रहल छै।

डाहल व्यवस्थाक देहजरुआ हाकिम
हक गरीबेक आइ सभ हाँफि रहल छै।

अजगर ई जाड़ कहिया ससरत मुदैया
राति नारेमे घुसियाक' काटि रहल छै।

सिट-सिट करै जेना गिरहतकेर कुक्कुर
जिनगी आगिक बले बस बाँचि रहल छै।

□

झपटैछ पात कुक्कुर, कुक्कुर सँ आदमी
झगड़ै अछि पेट लेल कुक्कुर सँ आदमी ।
धरती पर भूख आइ सड़क जकाँ नमरल
बनल बाज अँइठ लूझै कुक्कुर सँ आदमी ।
छीना-झपटीक क्रम अधिकारक रूप धएल
शोणित-शोणितामय भेल कुक्कुर सँ आदमी ।
कर्म आ कुकर्मोक बन्हन छल टूटि गेल
जे ने करय भूख, पतित कुक्कुर सँ आदमी ।

लोक-विरोधिकाक प्रतीकता

सरिपहुँ अहाँ भैया कमाल करै छी
अछि भ्रष्ट आचरण मुदा गाल करै छी।

पीबै छी गोनरिनर टीनक टीन घी
लोकक लग आदर्शक ताल करै छी।

धार जकाँ वसुलाक अपने दिस घूमल
अपने के अपने नेहाल करै छी।

कएल जे विरोध ओ लटकल त्रिशंकु सन
तरेतर तेहन ने जाल करै छी।

हितैषी बोनिहारक नापक लेल बोनि
अढ़ैया घट्टी, तरजू-डाल रखै छी।

▣

मैथिलीके मैथिले किछु दाबि रहल छै
ठाढ़ भऽ गाछ तर ठारि पाड़ि रहल छै

देखू इतिहास, आकाश देखलासँ की
ओर खिड़कीसँ घरकें निहारि रहल छै

मौका आयल ने धोखा मे क्यो जन पड़ू
पीठ पाछाँ ओ छुरा उसाहि रहल छै

मातृभाषा मधुर माय केर दूध सन
युग-युगसँ मनुक्ख गीत गाबि रहल छै

जँ चुकब तऽ चुकब हम अधिकार सँ
बिनु झगड़ने ने क्यो हक पाबि रहल छै

□

पत्र आयल अछि मैथिल जागल गामसँ
पठा रहलहुँ गजल हम हुनक नामसँ

रक्त तर्पण कएल किछु सहल चोट कें
मातृभाषा सरस मैथिलीक नामसँ

ढनमना गेल कोहबर सजल-स्वर्ग-सन
मधु हेरा गेल मधुमय मिलन जामसँ

क्रांति लहरा उठल ल' अङैठी विकट
शांति केर क्षेत्रमे आइ सभ ठामसँ

लेब अधिकार शोणित बहौ जे बहुत
उठल ललकार भीषण दहिन-बामसँ

□

मैथिली कथा

फाटि गेलै धरती आ टूटल  आकाश हमर
कनहा पर लादल छै अपने  लहास हमर ।

बितल कइएक युग, भोरक प्रत्याशामे
ने उगलै सुरुज, आस भेलै उदास हमर ।

रहतै की बाट हमर जिनगी केर अन्हारे
डूबल घन बीच, मनक उजरा प्रकाश हमर ।

औषधि विनु नेना गरीबक बीमार जेना
कुहरै छै कुहरै अछि, ओहिना हुलास हमर ।

दर्दक अभिव्यक्तिक ने शब्द कोनो भेटि रहल
गुमसुम हम मुर्ति जकाँ, प्राण अछि हतास हमर

बाप बेटीक आइ झमान भेल छै
सुनिकऽ मांग तिलकक मलान भेल छै

पस्त भेलै पनहीक एँड़ी खिया कऽ
ठोर फुफरी परल, मृयमान भेल छै

फाटल मिरजइ, प्योन धोतीमे साटल
बेटी कुमारि बिपत्ति-खान भेल छै

दिनोंमे राति जकाँ लौकै छै तारा
उड़ल नीन, दुतियाक चान भेल छै

नीकक कथा कोन बकलेलो बर केर
ओ, काटर समाजिक विधान भेल छै

□

जनम व्यर्थ बेटीकें देलौं विधाता
कर्म-अपकर्म हम कोन केलौं विधाता

ने सहल जा रहल माय-बाबूक पीड़ा
एहन निर्दय समाज की बनेलौं विधाता

होइछ मन डुबि मरी, कतेको मरै अछि
साँप तिलक-दहेज, विष चढ़ेलौं विधाता

कहै अछि, अजग भऽ रहल छैक गीतिया
सीतिया लेल बर ने सिरजेलौं विधाता

अजब यातना, छुट अभिव्यक्ति केर नञि
पशुए सन नीमूधन, बनेलौं विधाता

अछि काटर कसाय, कतिया हाथ लेने
बलि बूढ़वा पर युवती चढ़ेलौं विधाता

□

भेल बहुत, उठू युवक ! क्रांतिक आह्वान करू
गन्हकल परिपाटी ई तिलकक अवसान करू

बीकू जुनि माल जकाँ, हाट पर मनुक्ख अहाँ
चढ़ा डाक पर ने अपनाकें नीलाम करू

लोभ कोन ? गगा सन पावन सम्बन्ध बीच
विधि केर विधानकें श्रद्धासं सम्मान करू

जिनगी केर पूर्णता, प्रकृति ओ पुरुष अहाँ
पजरि रहल प्रीति, ने कंसारक निर्माण करू

बन्धु ! आब अबला, ने अबला रहत जानि लिअ
सहत कते दर्द कठिन, हुंकारत ज्ञान करू



सुरुज उगलेसँ की चिनबार अछि अन्हार
निठुर गिरहत उठा लेलनि सभटा पथार

खायेब कथी संग मोन लुलुआएल
बनौल सौंखे खेसारी सागक अँचार

कहि मनक डेढ़ मन लेब कातिकमे देलनि
कैल पूसेसँ दूनाक लेल तकरार

लोढ़ने छल नेना अंगो ने भेलै
हाय कानैछ भेल जेना ह्बोढ़कार

बन्हा गेल मुँह, आइ मेहठा बरद सन
छिना गेल छिप्पा, छल साजल सँचार

लागल श्रागि घरमे इनार खुनै छी
श्रपन हाथे श्रपने कपार चूरै छी

दुविधाक दंतक चपेट बर कड़गर
मुँहमे छुछुन्नरि भेल साँप घूरै छी

चानीक पनही उड़ल फरं चिड़ै सन
मारि प्रीतक कठिन, हम झाम गुरै छी

फूल जे सिम्मर केर सुगा सन सेबल
धार तरुश्रारिक भेल, तूर धुनै छी

माथ पर गिरगिट नचेलासँ हैत की
श्रछि काटर कसाइ कोना हित बुझै छी

□

कविताक फारसँ जोतब जा ने घरती
तोड़ब ने जाधरि सभ उसराही परती

रहितो कस्तूरी लग मृगा जकाँ भटकब
रहबे करत ताधरि तृष्णा केर बढ़ती

उपजत फसिल ने विवेक समता केर
शुचि गंगा ने प्रीतक धरा पर लहरती

जिनगी लहास बनल, सड़िकऽ गन्हाएल
समस्या केर साँपिनि जहर नित उगलती

छाल्ही पर दूधक, बैसल हम माछी सन
अछि बारुदक ढोड़मे हहरि रहल धरती

अन्तरमे नित्य महाभारत चलै-ए
घेरा व्यूहमे अभिमन्यू मरै-ए

अपन आंत अपने पका आगिमे
बंसल गाछ तर, भीम भूखल चखै-ए

छै डाका पड़ल घर, खसल वज्र नभसँ
माथ पर हाथ धयने युधिष्ठिर कनै-ए

आन्हरक सन्तान सह-सह करै अछि
अर्जुनके सभ क्यो नपुंसक कहै-ए

बिना वस्त्र कृष्ण धयल बाट बोनक
भयसँ दुःशासन केर थर-थर कंपै-ए

□

बानरक हे ँज जकाँ बीख रहल लोक
रंगल सियार जकाँ लीक रहल लोक

बढ़बा लेल आगाँ एक-दोसरासँ
वंचनाक सूत्र ध' दौड़ रहल लोक

उज्जर जतेक जे तते से कारी
कारी-सन आइ सिरमौर बनल लोक

जीबाक स्तर खसल निरघिन भेल
जे न करय पूजी, पछोड़ पड़ल लोक

रहतै विषमता ई जाधरि धरा पर
ताधरि अविवेक सिलौट रहत लोक



कथनी आ करनीमे अन्तर पड़ै-ए
औ भाषण जते, कहाँ राशन पबै-ए

पूजी, मशीन दुइ पाट बीच आदमी
पिसा रहल, चिक्कस गहूँमक बनै-ए

श्रमसँ जकर खेत उपजैछ आइ ओ
रोटी पर नून, मरचाय लय झखै-ए

सत्ता केर शासन व्यवस्थाक आढ़मे
अँगुरी अनीतिक संगमे रमै-ए

मैथिल किछु तहिना मैथिलिक नामपर
अपने हित सधबा के आकुल रहै-ए

■

मोन पड़ल आइ अपन आङन, घर, गाम
पत्र लिखू ककरा, छी सोचि रहल नाम

जिनगीक क्षण ओ इतिहासक पृष्ठ भेल
गलियारी गंगा, सीमान बनल धाम

मीत मनक नाङर, सरतियो भुलाएल
दूर गेला भैया हमर जगसँ राम

घर छोट-छोट भीत चूनासँ ढेउरल
चित्र ओहिपर राधा-कृष्णक ललाम

देखबा ले आँखि कान सुनबा ले आकुल
ढोरबा चमार केर, बउआ परनाम

संत्रासक युग ई अभावक बिहाड़िमे
कोम्हर के ठाढ़ अछि कतरा कोन ठाम

चमकलै ने बिजुरी, हड़ताल घटा कयलक
धरतीक हवा लगलै, हड़ताल घटा कयलक

उषम विषम, तावा सन सउँसे तबल धरती
इनारोमे भेल ने जल, हड़ताल घटा कयलक

मारल भदइ गेल अगहनियो पर आफत
आब बितलं अषाढ़ो हड़ताल घटा कयलक

छटपटमे प्राण, कृषक चिन्तामे डूबल सभ
आशंका अकालक, हड़ताल घटा कयलक

इन्द्रक सरकार नहि मानैछ माङ ओकर
आइ शिक्षके सन अड़ियल हड़ताल घटा कयलक

एहि जंगलसँ ओहि जंगलक जानवर
नीक अछि, आदमीसँ कतहु जानवर

दिनमे रूप किछु आ रातिमे रूप किछु
नहि बनाबैत अछि बन्धु, ओ जानवर

उर बसा द्वेष, ईर्ष्या, घृणा केर लहरि
रक्त-तर्पण करैछ नै कोनो जानवर

डूबिकऽ वासना केर दुर्गन्धमे
नहि सुनल, बलात्कारी बनल जानवर

अपन हाथे अपने परिधि आदमियतक
तोड़ि देलक मनुख, नै तोड़ल जानवर

मानवक विवेकशीलता समाप्त भऽ गेल. ओहि सँ बेसी आजकाल्हि पशु अछि

भेल जिनगी जहर, आब जीबै कोना
जखन दिने अन्हार, राति कटबै कोना

ठूँठ भेल गाछ जकाँ गिरहत उदास छै
हम छी लत्ती बिन सूँढ़क लतरबै कोना

बसातो बगदि गेल फुटहोपर आफत
पानिए ने, हम डोका तकबै कोना

लागल पराहि सभ गाम-घर छोड़ि रहल
बेमार बुढ़िया हम छोड़ि जयबै कोना

खयबा ले पात लोक भेल मजबूर आइ
हम काल ई अकालक बितयबै कोना

□

देखऽ चाही जँ गरीब कें, चलू देखाबी गाम मे
शहर मे नहि, भारतवासी लोक बसै अछि गाम मे

नेना-भुटका नङ-धरङ भूखल एक कौर भात ले
खाँसि रहल छै माय, बाप छै बध लागल सन गाम मे

धोती एकटा तरे-उपर कहुना तन कें झँपने
जाड़क राति बिता दैत अछि झुकैत घूर तर गाम मे

टाटक घर खढ़ नहि उपर अछि बन्धुआ मजदूर बनल
हनन भेल सभ इच्छा तैयो जीबि रहल अछि गाम मे

डोका-सारुक आर मूस छै बहुतोक आधार बनल
भाग्येवलीक दिन अन्न, भेटैछ ओकरा गाम मे

□

सामान्य लोकक स्थिति
स्वतंत्रताक बाद गामक स्वरूप

सांझ भरल, दीप जरल न आएल बोनिहार हमर
प्रतिक्षा में आँखि दुनू भेल अछि पथार हमर

घूमि अबैछ रोज-रोज नै लागैछ बोनि कतहु
भूख ! भूख ! भूखक लेल ज्वाला भकराड़ हमर

थिर रहतै प्राण कते अन्न बिना देह बीच
सागेटा करमी केर जिनगीक आधार हमर

होइतै जँ टिकसो केर टाका हम पठा दितिऐ
जा रहलै पनिजाब सभ होइतै उद्धार हमर

करबा ले कुटौनो-पिसान कोनाक' निकलू हम
अछि नेना पिहुआ, भेल नूआ तार-तार हमर

बनल बौक आ बहीर रहब कहिया धरि
हत्या अधिकारक करैत रहब कहिया धरि

भाषायी अधिकार हमरा सँ दूर बहुत
बितल पैंतीस बरख चुप रहब कहिया धरि

मिसरजी, लालाजी, झाजी औ यादव जी
बाजू ने लोरिक-सल्हेस बनब कहिया धरि

बन्दी छथि मैथिली अपने घर-आङन मे
मुक्तिक प्रयासाधिकार ! करब कहिया धरि

लड़ने बिनु अधिकार भेटल न ककरो
क्रांतिक आह्वान आब करब कहिया धरि

□ □

अपहरण भ' रहल, सरेआम सड़क पर
अछि देखि रहल लोक, सरेआम सड़क पर

आतंकक वातावरण करमीक लत्ती सन
अछि पसरल सभ ठाम, सरेआम सड़क पर

लोभ केर वेश्याक फंसल रूप जाल मे
अछि दल-सदल लड़ैछ, सरेआम सड़क पर

बम केर धमाका हैत कखन कोम्हर सँ
अछि क्यो ने जनैछ, सरेआम सड़क पर

आन्हर ओ जकरा पर निर्भर व्यवस्था
अछि थाहि रहल आइ, सरेआम सड़क पर

□ □

बसाते मे तीर ग्रहाँ छोड़ै छो
बन्हने बिनु बान्ह, धार मोड़ै छी

परुकी ने गाछ पर, करोड़िया जकाँ
ठाढ़ कोना, नरसर कें जाड़ै छी

मुँहक ने होइछ खतियान, बुझि ग्रपने
घाड़ो गप्प केर बन्हाता छोड़ै छी

सभटा ग्रसम्भव ग्रछि हस्तामलक सन
ग्रो कुदिए क' चान ग्रहाँ तोड़ै छी

थिकौं प्रणम्य, प्रणाम स्वीकार करू
हम हारि गेलौं, मुँह ग्रपन मोड़ै छी

सामान्य मनुष्यक स्थिति, अस्तित्व संकटपूर्ण, आशंकित,

ठेंगा जकां ठाढ़ भेल, नागे देखैत छी
हम बाट-घाट सभठाम, नागे देखैत छी

बिष सँ बिषाक्त भेल, कहबै छल चानन जे
चानन केर ग्रानन पर, नागे देखैत छी

बिषमय मे पड़ल मोन-प्राण हमर
हर डेगक ठहराव पर, नागे देखैत छी

ग्रौ गिरगिटे जकां नाग बदलैछ रूप ग्राइ
डसैछ विहुला कें सुतिया, नागे देखैत छी

ग्रजगर तँ गीड़ि जाइछ, लागत ने थाह कोनो
रवियो कें छनैत मुदा नागे देखैत छी

मौसममे बदलाव आबि गेल देखू ने
वसन्ते मे बरिसात आबि गेल देखू ने

उदासी भरल दिन, गति जिनगीक उदास सन
नदी सुखायल सभ खेत दहा गेल, देखू ने

मनुखे सन मौसमो उनटि क5 चलय लागल
लता वेलीक जही फूला गेल, देखू ने

एक-दोसरा सं चलैछ काते-कात भेल
बिनु बाते दुनाली देखा गेल, देखू ने

परिधि-बीच नव-नव उगैछ परिधि रोज
लहरि लोल जेना लहरा गेल, देखू ने

धौगी जेंका छोट आब पुनसा बढ़ौलक
छोंट नोआ सं धौगी छुटा गेल; देखू ने

शहर केर सागर मे आइ गाम डूमि रहल
कामांध कामिनी कें पकड़ि जेना चूमि रहल

भौंरा जकाँ रस लोभी, वसन्ती गुलाब पर
फैलौने जाल अपन शोषण केर घूमि रहल

हरियायल खेत झुकल सीस गहुँम, धान केर
महाजन केर सूदि-जोंक तखनहि सँ चूसि रहल

मुखिया बैमान, लोभग्रसित सरपंच आइ
भेल नाङर इमान, बैशाखी पर रेङि रहल

सामाजिक सुरक्षाबला पेन्सन सरकारी
मुइलहो केर नाम पर उठा-उठा बूकि रहल ■

KANHA
PAR
LAHAS
HAMAR

Shri Kalanand Bhatta.
Kosi Project
Supaul
Saharsa